नईदुनिया

संपादकीय

अपनी ही आग में झुलस रहा पाकिस्तान

पाकिस्तान इन दिनों अपनी ही आग में झुलस रहा है। उधर बलूचिस्तान प्रांत में उसे बलूच विद्रोहियों से कड़ी चुनौती मिल रही है, तो इधर पाक सेना के तैयार किए आतंकवादियों को निशाना बनाया जाने लगा है। लश्कर-ए-तैयबा के शीर्ष कमांडर जिया-उर-रहमान की पाकिस्तान में हत्या इस बात का संकेत है कि आतंकवाद खुद पाकिस्तान के लिए नासूर बन चुका है। छिपी बात नहीं है कि पाकिस्तानी सेना और खुफिया एजंसी आइएसआइ आतंकवादी संगठनों को इस इरादे से संरक्षण देते रहे हैं कि उनके जरिए भारत में अशांति फैलाई जा सके। मगर वही आतंकी अब उसके लिए मुश्किलें खड़ी करने लगे हैं।

तमाम सबूतों से जाहिर है कि लश्कर जैसे आतंकी संगठनों के नेताओं को वहां की सरकार कड़े पहरे और सुरक्षा घेरे में रखती है। जिन संगठनों और आतंकियों को विश्व भर में प्रतिबंधित किया जा चुका है, उन्हें भी वह पोसती है। छिपी बात नहीं है कि हाफिज सईद ने भारत में अनेक आतंकी हमलों की साजिश रची थी, पर पाकिस्तानी हुकूमत इसे मानने को तैयार नहीं। उसने हाफिज को कड़ा सुरक्षा घेरा मुहैया करा रखा है। ताजा घटना में मारा गया जिया-उर-रहमान हाफिज का खास कमांडर था और उसे भी पाकिस्तानी सेना ने कड़ी सुरक्षा दे रखी थी।

खबर है कि जिया-उर-रहमान के मारे जाने के बाद पाकिस्तान सरकार के माथे पर बल पड़ गए हैं। वहां की सेना ने हाफिज सईद की सुरक्षा बढ़ा दी है। रहमान जम्मू-कश्मीर में अनेक आतंकी गतिविधियों का साजिशकर्ता था। भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा एजंसी ने उसे वांछितों की सूची में डाल रखा था। मगर पाकिस्तानी सेना की कड़ी सुरक्षा में सेंध लगा कर अगर रहमान को मार डाला गया, तो जाहिर है, वहां ऐसे संगठन तैयार हो चुके हैं, जो सरकारी सुरक्षा वाले आतंकी संगठनों को चुनौती देने लगे हैं।

भारत लगातार कहता और सबूत पेश करता रहा है कि पाकिस्तान दहशतगर्दी का कारखाना बन चुका है। मगर उस पर कभी गंभीरता से अंकुश लगाने की अंतरराष्ट्रीय कोशिश नहीं हुई। पहले अमेरिका उसके दहशतगर्दों का बचाव करता था, अब चीन करने लगा है। जब भी संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में पाकिस्तान पर प्रतिबंध लगाने की बात उठती है, तो चीन अपने विशेषाधिकार का इस्तेमाल कर उसे बचा लेता है। इसलिए कि पाकिस्तान से उसके स्वार्थ जुड़े हैं। मगर पाकिस्तान खुद यह समझना नहीं चाहता कि आतंकवाद को पोसने का खमियाजा सबसे अधिक उसे ही उठाना पड़ रहा है। इसी महीने आई विश्व आतंकवाद से संबंधित रपट में खुलासा हुआ कि दुनिया में सबसे अधिक आतंकवाद से प्रभावित देश पाकिस्तान है। पाकिस्तान इन दिनों सबसे खराब माली हालत से गुजर रहा है। वहां शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी सेवाएं बुरी तरह चरमरा चुकी हैं। वहां की आम अवाम आटे-दाल के लिए संघर्ष कर रही है। मगर पाकिस्तानी हुकूमत का ध्यान मुल्क की माली हालत बेहतर करने के बजाय चीन की इमदाद पर अधिक है। इसका तीखा विरोध उसे बलूचिस्तान प्रांत में झेलना पड़ रहा है।

पाकिस्तान के बाकी हिस्सों में भी गहरा असंतोष है। ऐसे में आतंकवादियों को पोसने पर पाकिस्तानी सेना का खर्च लोगों की आंखों में चुभ रहा है। इस कयास से इनकार नहीं किया जा सकता कि ऐसे ही किसी विद्रोही गुट ने वहां पल रहे आतंकवादी संगठनों को निशाना बनाना शुरू कर दिया है। अगर पाकिस्तान इसी तरह आग से खेलता रहा, तो वह और झुलसेगा।

तू है चिड़िया मेरे आंगन की...

रमेश सर्राफ धमोरा

(20 मार्च/ विश्व गौरैया दिवस/ विशेष)

हमारे घर के आंगन में सबसे बड़ी संख्या में एक छोटी चिड़िया देखने को मिलती है जिसे हम गौरैया कहते हैं। यह चिड़िया बचपन से ही हमारी साथी बन जाती है। जब बच्चा कुछ समझने लगता है तो सर्वप्रथम उसको जो पक्षी देखने को मिलता है वह नन्हीं चिड़िया यानी गौरैया होती है। यह नन्ही चिड़िया बच्चों के इर्द-गिर्द ही घूमती रहती है और अपनी मीठी आवाज से उन्हें आकर्षित करती रहती है। गौरैया बच्चों के हाथ से कई बार खाने की वस्तु भी झपटकर ले जाती है। छोटे बच्चे उन्हें पकड़ने के लिए उसके पीछे दौड़ते हैं और वह फुर्र से उड़कर ऊपर बैठ जाती है। गांव-देहात में यह आज भी देखने को मिल जाती है। मगर शहरों में अब ऐसा नजारा शायद ही कहीं देखने को मिलता होगा।

कभी बड़ी संख्या में हमारे साथ रहने वाली गौरैया अब धीरे-धीरे बहुत कम होती जा रही है। मगर जीवन की भागदौड़ में किसी का ध्यान इनकी घाटी संख्या की तरफ नहीं जा रहा है। बच्चों की सबसे नजदीकी मित्र गौरैया जिस तेजी से कम होती जा रही है उससे लगता है आने वाले समय में यह कहीं विलुप्त न हो जाए। इसलिए हम सबको मिलकर गंभीरता से ऐसे प्रयास करने चाहिए जिससे गौरैया को संरक्षण मिल सके और उनकी संख्या में फिर से बढ़ोतरी प्रारंभ हो सके।

गौरैया छोटे, फुर्तीले पक्षी होते हैं जो 4 से 7 इंच तक लम्बे होते हैं। उनके गोल, मोटा शरीर और छोटी मजबूत चोंच होती हैं जो खुले बीजों को तोड़ने के लिए उपयुक्त होती हैं। उनके पंखों पर धारियां या गहरे रंग के धब्बे होते हैं। यह हल्की भूरे रंग या सफेद रंग में होती है। इसके शरीर पर छोटे-छोटे पंख और पीली चोंच व पैरों का रंग पीला होता है।

गौरैया मनुष्य के आसपास रहना पसंद करती है। यह लगभग हर तरह की जलवायु पसंद करती है पर पहाड़ी स्थानों में कम दिखाई देती है। शहरों, कस्बों, गांवों, और खेतों के आसपास यह बहुतायत में पाई जाती है। नर गौरैया के सिर का ऊपरी भाग नीचे का भाग और गालों पर पर भूरे रंग का होता है। गला चोंच और आंखों पर काला रंग होता है और पैर भूरे होते है। मादा के सिर और गले पर भूरा रंग नहीं होता है। नर गौरैया को चिड़ा और मादा चिड़ी या चिड़िया भी कहते हैं।

गौरैया पक्षियों के पैसर वंश की एक जीव वैज्ञानिक जाति है जो विश्व के अधिकांश भागों में पाई जाती है। आरम्भ में यह एशिया, यूरोप और भूमध्य सागर के तटवर्ती क्षेत्रों में पाई जाती थी। लेकिन मानवों ने इसे विश्वभर में फैला दिया है। यह मनुष्यों के समीप कई स्थानों में रहती हैं। पिछले कुछ सालों में शहरों में गौरैया की कम होती संख्या पर चिन्ता प्रकट की जा रही है। आधुनिक स्थापत्य की बहुमंजिली इमारतों में गौरैया को रहने के लिए जगह नहीं मिल पाती।

हर वर्ष 20 मार्च को विश्व गौरैया दिवस मनाया जाता है। इस दिन को मनाने का उद्देश्य है गौरैया के संरक्षण के प्रति लोगों को जागरूक करना और उनके लिए हमारे आस पास का माहौल बेहतर करना है। गौरैया चिड़िया को घरेलू चिड़िया भी कहा जाता है। क्योंकि यह घरों के अंदर भी घोसले बनकर रह लेती है। ये मानव और प्रकृति के लिए बहुत उपयोगी है। क्योंकि यह कीड़ों को खाती है जिससे कीड़े पौधों को नुकसान नहीं पहुंचा पाते हैं। गौरैया एक ऐसी चिड़िया है जो पर्यावरण के लिए बहुत जरूरी है। इसके अलावा धर्मशास्त्र के मुताबिक गौरैया का आपकी छत पर आना आपके लिए शुभ होता है। जानकारों का कहना हैं कि यह चिड़िया शांति और सद्भावना का संदेश लेकर आती है।

आंकड़े बताते हैं कि विश्व भर में घर-आंगन में चहकने-फुदकने वाली छोटी सी प्यारी चिड़िया गौरैया की आबादी में 60 से 80 फीसदी तक की कमी आई है। ब्रिटेन की 'रॉयल सोसाइटी ऑफ प्रोटेक्शन ऑफ बर्ड्स' ने भारत से लेकर विश्व के विभिन्न हिस्सों में अनुसंधानकर्ताओं द्वारा किए गए अध्ययनों के आधार पर गौरैया को 'रेड लिस्ट' में डाला था। वहीं आंध्र विश्वविद्यालय द्वारा किए गए अध्ययन के मुताबिक गौरैया की आबादी में करीब 60 फीसदी की कमी आई है। यह कमी ग्रामीण और शहरी दोनों ही क्षेत्रों में हुई है। पश्चिमी देशों में हुए अध्ययनों के अनुसार गौरैया की आबादी घटकर खतरनाक स्तर तक पहुंच गई है। जबकि स्टेट ऑफ इंडियाज बर्ड्स (एसओआईबी) रिपोर्ट 2023 के मुताबिक पिछले 25 सालों में गौरैया की आबादी कुल मिलाकर काफी स्थिर रही है। हालांकि भारत में हाउस स्पैरो की संख्या कम होने की आम धारणा है। गौरैया के संरक्षण के प्रति जागरूकता को लेकर दिल्ली सरकार ने 2012 और बिहार सरकार ने 2013 से गौरैया को राजकीय पक्षी घोषित कर रखा है।

कभी हमारे घर-आंगन में गिरे अनाज को खाने गौरैया फुर्र से आती थी और दाना चुगकर उड़ जाती थी। हालांकि गांवों में आज भी कई घरों में गौरैया आ रही है। गौरैया की संख्या में कमी के पीछे कई कारण हैं जिन पर लगातार शोध हो रहे हैं। गौरैया की संख्या में कमी के पीछे के कारणों में आहार की कमी, बढ़ता आवासीय संकट, कीटनाशक का व्यापक प्रयोग, जीवन-शैली में बदलाव, प्रदूषण और मोबाइल फोन टावर से निकलने वाले रेडिएशन को दोषी बताया जाता रहा है। गौरैया की संख्या में कमी के पीछे बेतहाशा कीटनाशक का प्रयोग को माना जा रहा है। गौरैया अपने बच्चे को फसल, साग-सब्जी, फलों में लगने वाले कीड़े को खिलाती है। इससे गौरैया के बच्चे को भरपूर प्रोटीन मिलता है। बच्चा अनाज खा नहीं सकता है लेकिन जिस तरह से फसल-सब्जी-फल-अनाज में कीटनाशकों का इस्तेमाल बढ़ा है। उससे उनके बच्चों को सही आहार मिल पाने में परेशानी हो रही है। फसल और साग-सब्जी में बेतहाशा कीटनाशक के प्रयोग ने कीड़ों को मार डाला है। ऐसे में गौरैया अपने बच्चे को पालने के दौरान समुचित आहार यानी प्रोटीन नहीं दे पाती है और बच्चे कमजोर हो जाते हैं।

गौरैया के प्रजनन के लिए अनुकूल आवास में कमी को भी इसकी संख्या में कमी का एक कारण माना जा रहा है। कच्चे घरों का तेजी से कंक्रीट के जंगलों में तब्दील होने से शहरों में इनके प्रजनन के लिए अनुकूल आवास नहीं मिलते हैं। यही वजह है कि एक ही शहर के कुछ इलाकों में ये दिखती है तो कुछ में नहीं। गौरैया संरक्षण में जुड़े लोग कृत्रिम घर बनाकर गौरैया को प्रजनन के लिए आवास देने की पहल चला रहे हैं। इसमें गौरैया अंडे देने के लिए आ भी रही हैं। जहां तक गौरैया का सवाल है यह इन्सानों की दोस्त तथा किसानों की मददगार है। गौरैया इन्सान के साथ रहते हुए उन्हें सुख-शांति प्रदान करती हैं। बच्चों का बचपन इसके साथ खेलते हुए गुजरता है। लेकिन हम इन्सानो ने ही इसे अपने से दूर कर दिया है। भारत में पक्षियों की कुल मिलाकर 1250 प्रजातियां हैं। जिनमें से 85 प्रजातियां विलुप्त होने की कगार पर हैं। जिसमें गौरैया का भी नाम शामिल है। गौरैया का सुरक्षित रखना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि यह खेतों की फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले कीटों को खा लेती है। जिससे किसान की फसल खराब होने से बच जाती हैं। गौरैया अपना घौंसला इंसानों के करीब बनाती है। इससे उनके घौंसले उजाड़ दिए जाते हैं।

बढ़ता वायु प्रदूषण भी इन पक्षियों के लिए मुसीबत है। इसलिए जरूरी है कि हम अभी से यह समझने की कोशिश करें कि छोटी सी गौरैया हमारे जीवन के लिए कितनी अहम है। ऐसे में उसकी रक्षा हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। 2025 में विश्व गौरैया दिवस की थीम प्रकृति के नन्हे दूतों को श्रद्धांजलि है। यह थीम पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में गौरैया की भूमिका पर प्रकाश डालती है और संरक्षण प्रयासों को प्रोत्साहित करती है।

सुनहरा लम्हा: धरती पर लौटीं सुनीता विलियम्स

डॉ. सत्यवान सौरभ

नासा की अनुभवी अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स और उनके साथी बुच विल्मोर, जो पिछले नौ महीने से अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) पर थे, आज सफलतापूर्वक धरती पर लौट आए। स्पेसएक्स के ड्रैगन कैप्सूल की मदद से उन्होंने मेक्सिको की खाड़ी में सुरक्षित लैंडिंग की। सुनीता विलियम्स और बुच विल्मोर जून 2024 में बोइंग के स्टारलाइनर के साथ परीक्षण उड़ान के लिए अंतरिक्ष में गए थे। हालांकि, स्टारलाइनर में तकनीकी खामी के कारण उनकी वापसी में देरी हुई, जिससे वे नौ महीने तक आईएसएस पर रहे। उनकी वापसी के लिए स्पेसएक्स का क्रू-10 मिशन लॉन्च किया गया था, जिससे सफलतापूर्वक उन्हें धरती पर वापस लाया जा सका। वापसी के बाद दोनों अंतरिक्ष यात्रियों को स्ट्रेचर पर ले जाया गया, जो लंबे समय तक भारहीनता में रहने के बाद एक सामान्य प्रक्रिया है।

यह मिशन न केवल तकनीकी दृष्टि से महत्त्वपूर्ण रहा बल्कि इससे वैज्ञानिकों को अंतरिक्ष में लंबे समय तक रहने के प्रभावों को समझने में भी मदद मिलेगी। इससे नासा और अन्य अंतरिक्ष एजेंसियों को भविष्य के गहरे अंतरिक्ष अभियानों, जैसे मंगल पर मानव मिशन की योजना बनाने में सहायता मिलेगी। सुनीता विलियम्स व उनके सहयोगी की वापसी अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। यह मिशन भविष्य के अंतरिक्ष अभियानों के लिए मूल्यवान डेटा प्रदान करेगा और अंतरिक्ष यान तकनीक के सुधार में सहायक सिद्ध होगा।

सुनीता विलियम्स और उनके जैसे अनुभवी अंतरिक्ष यात्री भविष्य के चंद्र और मंगल अभियानों में अहम भूमिका निभा सकते हैं। नासा और अन्य स्पेस एजेंसियाँ अब दीर्घकालिक अंतरिक्ष मिशनों की तैयारी कर रही हैं, जिनमें अंतरिक्ष में रहने के नए तरीके, कृत्रिम गुरुत्वाकर्षण की संभावनाएँ और अंतरिक्ष यात्रियों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को कम करने की रणनीतियाँ शामिल हैं। इसके अलावा, स्टारलाइनर जैसी तकनीकों में सुधार कर, अंतरिक्ष अन्वेषण को अधिक सुरक्षित और कुशल बनाया जाएगा। अंतरिक्ष में मानव उपस्थिति को और विस्तारित करने के लिए वैज्ञानिक शोध जारी रहेंगे, जिससे भविष्य में मंगल और उससे आगे की यात्राएँ संभव हो सकेंगी।

सुनीता विलियम्स भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री हैं, जिनका भारत से गहरा जुड़ाव रहा है। उनके पिता भारतीय मूल के हैं और उन्होंने कई बार भारत के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त किया है। भारत में अंतरिक्ष विज्ञान और अनुसंधान की बढ़ती उपलब्धियों के बीच सुनीता विलियम्स एक प्रेरणास्रोत बनी हुई हैं। इसरो (आईएसआरओ) भी अब मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम, गगनयान की दिशा में तेजी से बढ़ रहा है। इसरो ने हाल ही में गगनयान के लिए प्रमुख परीक्षण पूरे किए हैं और आने वाले वर्षों में भारत के पहले मानव अंतरिक्ष मिशन को लॉन्च करने की योजना बना रहा है।

सुनीता विलियम्स की उपलब्धियाँ न केवल भारतीय वैज्ञानिकों बल्कि देश के युवाओं के लिए भी प्रेरणा का स्रोत हैं। उनकी सफलता यह दिखाती है कि भारतीय मूल के लोग वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। भविष्य में, इसरो और नासा के बीच सहयोग बढ़ सकता है, जिससे भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को और मजबूती मिलेगी। सुनीता विलियम्स न केवल एक उत्कृष्ट अंतरिक्ष यात्री हैं बल्कि एक प्रेरणादायक व्यक्तित्व भी हैं। उनका सफ़र यह दर्शाता है कि कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प और विज्ञान के प्रति जुनून कैसे किसी को नई ऊंचाइयों तक पहुँचा सकता है। उन्होंने विशेष रूप से महिलाओं और युवा वैज्ञानिकों को प्रेरित किया है कि वे अंतरिक्ष अनुसंधान और विज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ें। उन्होंने कई मौकों पर भारतीय छात्रों व युवाओं से संवाद किया है और उन्हें वैज्ञानिक क्षेत्रों में करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया है। उनके अनुभव और उपलब्धियाँ न केवल अंतरिक्ष क्षेत्र बल्कि विज्ञान और तकनीक में रुचि रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए प्रेरणा हैं। उनकी कहानी यह संदेश देती है कि सीमाएँ केवल मानसिकता में होती है और यदि कोई लक्ष्य निर्धारित किया जाए तो उसे प्राप्त किया जा सकता है।

सुनीता विलियम्स और उनके जैसे अनुभवी अंतरिक्ष यात्री भविष्य के चंद्र और मंगल अभियानों में अहम भूमिका निभा सकते हैं। नासा और अन्य स्पेस एजेंसियाँ अब दीर्घकालिक अंतरिक्ष मिशनों की तैयारी कर रही हैं, जिनमें अंतरिक्ष में रहने के नए तरीके, कृत्रिम गुरुत्वाकर्षण की संभावनाएँ और अंतरिक्ष यात्रियों के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को कम करने की रणनीतियाँ शामिल हैं। इसके अलावा, स्टारलाइनर जैसी तकनीकों में सुधार कर अंतरिक्ष अन्वेषण को अधिक सुरक्षित और कुशल बनाया जाएगा। अंतरिक्ष में मानव उपस्थिति को और विस्तारित करने के लिए वैज्ञानिक शोध जारी रहेंगे, जिससे भविष्य में मंगल और उससे आगे की यात्राएँ संभव हो सकेंगी। सुनीता विलियम्स की वापसी अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। यह मिशन भविष्य के अंतरिक्ष अभियानों के लिए मूल्यवान डेटा प्रदान करेगा और अंतरिक्ष यान तकनीक के सुधार में सहायक सिद्ध होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सुनीता विलियम्स की सफल वापसी पर बधाई देते हुए उनके साहस तथा समर्पण की सराहना की। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि उनका यह मिशन भारत के अंतरिक्ष वैज्ञानिकों और युवाओं के लिए एक प्रेरणा है, जो अंतरिक्ष में नई ऊंचाइयों को छूने का सपना देखते हैं।

आजकल

निर्वासन मामले में गलत है अमेरिका

कोलंबिया यूनिवर्सिटी की भारतीय पीएचडी स्टूडेंट रंजनी श्रीनिवासन को फलस्तीन समर्थक प्रदर्शन के चलते अमेरिका में निर्वासन का सामना करना पड़ा। ट्रंप प्रशासन ने राष्ट्रीय सुरक्षा का हवाला देते हुए उनका एफ-1 वीजा रद्द कर दिया, बावजूद इसके कि शांतिपूर्ण प्रदर्शन को हिंसा और आतंकवाद का समर्थन नहीं कहा जा सकता। अमेरिका में कोलंबिया यूनिवर्सिटी की भारतीय मूल की पीएचडी स्टूडेंट रंजनी श्रीनिवासन का स्न-1 वीजा रद्द होने की वजह से निर्वासन पर मजबूर होना पड़ा, जो दुखद है। उनका वीजा कथित तौर पर यूनिवर्सिटी कैंपस में फलस्तीन के समर्थन में हुए प्रदर्शन में शामिल होने की वजह से रद्द किया गया था।

अमेरिकी होमलैंड सिक्योरिटी डिपार्टमेंट की ओर से कहा गया कि अमेरिका में रहने और पढ़ने के लिए जिन लोगों को वीजा मिलता है, यह उनके लिए सम्मान की बात होनी चाहिए। उसने यह भी कहा कि इस तरह का वीजा जिन लोगों को मिला है, अगर वे हिंसा और आतंकवाद की तरफदारी करते हैं तो उनसे यह सम्मान वापस ले लिया जाना चाहिए। लेकिन क्या रंजनी ने हिंसा और आतंकवाद का समर्थन किया था? अगर हां तो ट्रंप प्रशासन ने इसके सबूत क्यों नहीं दिए। फलस्तीन के समर्थन में शांतिपूर्ण प्रदर्शन में शामिल होने को हिंसा और आतंकवाद का समर्थन करना नहीं माना जा सकता। दुनिया के ज्यादातर मुल्क फलस्तीन-इस्राइल संघर्ष में 'टू स्टेट थिअरी' की वकालत करते हैं। उनमें भारत भी शामिल है। इस थिअरी के मुताबिक, फलस्तीन और इस्राइल दोनों को अपना अस्तित्व बनाए रखने का अधिकार है। इस संघर्ष की सचाई यह है कि इस्राइल ने फलस्तीन के बड़े इलाके पर कब्जा किया हुआ है और हमास के उसके क्षेत्र में आतंकवादी हमला करने और इस्राइलियों को बंधक बनाए जाने के बाद बिन्यामिन नेतन्याहू सरकार गाजा में सैन्य अभियान चला रही है, जिसमें बड़ी संख्या में फलस्तीनी मारे गए हैं और वहां एक मानवीय संकट भी खड़ा हो गया है। नेतन्याहू पर युद्ध अपराधों को लेकर अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायालय ने वॉरंट जारी किया हुआ है. जबकि इस्राइल-फलस्तीन युद्ध पर अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप का गाजा को ' आरआईवीआईईआरए' बनाने का हास्यास्पद प्रस्ताव आ चुका है।

प्लेसमेंट व पैकेज की समस्या से जूझते युवा

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

पढ़े-लिखे युवाओं के लिए रोजगार की अनुपलब्धता किसी एक देश की समस्या ना होकर वैश्विक बन गई है। अब तो यह भी बेमानी है कि आपने कहां से अध्ययन किया है। हालात यह है कि दुनिया के श्रेष्ठतम अध्ययन केन्द्रों से पासआउट युवा भी अच्छे पैकेज के रोजगार के लिए मुश्किलों का सामना कर रहे हैं। यह वास्तविकता है कि हार्वर्ड, स्टैनफोर्ड, शिकागो, कोलंबिया, एमआईटी, पेन्सिलवेनिया, एमआईटी जैसे वैश्विक ख्यातनाम संस्थानों से एमबीए किए युवाओं को पासआउट होने के तीन माह बाद तक नौकरी की पेशकश नहीं मिलने की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है। ब्लूमबर्ग ने अमेरिका के सात शीर्ष संस्थानों से एमबीए का अध्ययन कर निकले विद्यार्थियों के प्लेसमेंट को लेकर किए गए अध्ययन में इसका खुलासा किया है।

चौंकाने वाली बात यह है कि 2021 की तुलना में 2024 में यह प्रतिशत करीब-करीब चार गुणा बढ़ गया है। 2021 में केवल 4 प्रतिशत पासआउट छात्र ही ऐसे थे जिन्हें पासआउट के तीन माह बाद तक ऑफर नहीं मिलता था, वह संख्या 2024 तक बढ़कर 15 प्रतिशत हो गई है। अमेरिका के शीर्ष सात संस्थनों में कहीं-कहीं तो छह गुणा तक की यह बढ़ोतरी देखी गई है। यह इसलिए भी चिंताजनक है कि जिन संस्थानों के अध्ययन का स्टैंण्डर्ड निर्विवाद रूप से विश्व भर में श्रेष्ठतम रहा है और जिनकी वैश्विक पहचान है, उनकी यह हालत है तो आम संस्थानों की क्या होगी? यह अकल्पनीय है। हो सकता है कि ब्लूमबर्ग की रिपोर्ट अतिश्योक्तिपूर्ण हो पर हालात जिस तरह के सामने आ रहे हैं उससे यह साफ हो जाता है कि प्लेसमेंट की समस्या दिन प्रतिदिन गंभीर होती जा रही है।

सवाल केवल प्लेसमेंट तक सीमित नहीं है अपितु पैकेज में भी लगातार कमी देखी जा रही है। चंद युवाओं को अच्छा पैकेज मिल जाना इस बात का प्रमाण नहीं हो सकता कि कंपनियों द्वारा युवाओं को अच्छा पैकेज दिया जा रहा है। दरअसल, कोरोना के बाद से प्लेसमेंट और पैकेज को लेकर हालात बहुत हद तक बदल गए हैं। यदि हम भारत की ही बात करें तो देश के शीर्ष प्रबंधन संस्थानों से पासआउट युवाओं को 2022 में औसत 29 लाख का पैकेज मिल रहा था तो वह 2024 आते-आते 27 लाख पर आ गया है। यह सब देश-दुनिया के शीर्ष अध्ययन संस्थानों से पासआउट युवाओं को लेकर है। सामान्य व मध्यस्तरीय संस्थानों से पासआउट युवाओं को मिलने वाला पैकेज तो बहुत ही कम होता जा रहा है। दूसरी ओर घरबार छोड़कर 90 घंटे तक काम करने को लेकर बहस चल रही है। एक और पिकोक कल्चर, हाईब्रीड सिस्टम और वर्क फ्रॉम होम से कार्यस्थल पर युवाओं को लाने की जद्दोजहद जारी है तो दूसरी और कम होते अवसर चिंता का विषय बनते जा रहे हैं।

सरकारें लाख प्रयास करें या विपक्षी बेरोजगारी बढ़ने के लाख आरोप प्रत्यारोप लगाये पर लगता है कि प्लेसमेंट, रोजगार और पैकेज का संकट किसी एक देश का नहीं अपितु वैश्विक समस्या बनती जा रही है। इससे युवाओं में कहीं ना कहीं निराशा भी आती जा रही है। हालांकि हार्वर्ड, शिकागो आदि के शिक्षा के स्तर को लेकर प्रश्न नहीं उठाया जा सकता पर तस्वीर का दूसरा पक्ष यह भी है कि हार्वर्ड, शिकागो या इस तरह की उच्च गुणवत्ता वाली संस्थाओं में अध्ययन करने वाले कितने युवा होते हैं जिनमें इन संस्थाओं के अध्ययन का खर्च उठाने की क्षमता होती है। जब इस तरह की उच्च गुणवत्ता वाली संस्थाओं से अध्ययन प्राप्त कर निकले युवाओं के सामने ही प्लेसमेंट या पैकेज का संकट आ रहा है तो अन्य संस्थानों से अध्ययन प्राप्त युवाओं की स्थिति क्या होगी, यह स्वयं में सोचनीय है।

जहां तक हमारे देश की बात की जाए तो यह साफ है कि हमारे यहां एक तरह से अंधी दौड़ चलती है। एक समय था जब कुकुरमुत्ते की तरह प्रबंधन संस्थान खुले और आज हालात यह है कि निजी क्षेत्र में खुले इस तरह के संस्थानों को क्षमता के अनुसार विद्यार्थी ही नहीं मिल रहे हैं। लगभग यही स्थिति इंजीनियरिंग कॉलेजों की होती जा रही है। गली-गली में फार्मेसी संस्थान खुलते जा रहे हैं। सौ टके का सवाल यह है कि अध्ययन संस्थान खोलने की अनुमति के साथ ही अध्ययन का स्तर भी बनाये रखने के लिए फैकल्टी को लेकर भी मान्यता देते समय सरकार को गंभीर होना होगा। जब तक स्तरीय अध्ययन उपलब्ध नहीं होगा तब तक हम पासआउट तो करते रहेंगे पर प्लेसमेंट या अच्छे पैकेज की उम्मीद बेमानी है। सरकार को शिकागो, हार्वर्ड कोलंबिया, पेन्सिलवेनिया या इसी तरह के संस्थानों से पासआउट छात्रों के साथ जो हालात बन रहे हैं, उससे समय रहते सबक लेना होगा और अन्य संस्थानों में भी शिक्षण व शोध की गुणवत्ता सुनिश्चित करनी होगी।